नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जंगल धूसड़- गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 31.10.2018

प्रकाशनार्थ

महाराणा प्रताप पी.जी. कॉलेज जंगल धूसड़, में **सरदार बल्लभ भाई पटेल जयन्ती एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी पूण्यतिथि** पर आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान देते हुए **प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव** ने कहा कि दोनों ही महापुरुषों का जीवन हमारे लिए अनुकरणीय है। सरदार पटेल भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। भारत की आजादी के पश्चात वे भारत के गृहमंत्री तथा उपप्रधानमंत्री बने। उन्होने बारदोली सत्याग्रह का कुशल नेतृत्व किया यहीं पर उन्हे सरदार की उपाधि प्राप्त हुयी। आजादी के बाद विभिन्न रियासतों में बिखरें भारत के भू–राजनीतिक एकीकरण में उन्होने केन्द्रीय भूमिका निभाई। गृह मंत्री के रूप में उनकी यह पहली प्राथमिका थी कि देशी रियासतों को भारत में मिलाया जाय। इसको उन्होने बिना रक्तपात के सम्पादित कर दिखाया और जब सैन्य शक्ति की आवश्यकता पड़ी तब आपरेशन पोलो के लिए इसका प्रयोग किया और विजय प्राप्त की। अगर पंडित नेहरू ने काश्मीर समस्या को अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बताकर अपने पास न रखा होता तो इसकी भी सामाधान उसी वक्त हो गया होता। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस वक्त लिया गया होता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म ही नहीं हुआ होता। यदि पटेल के कहने पर चलते तो चीन, तिब्बत, नेपाल आदि के हालात आज जैसे न होते। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरर्शिता एक साथ थी। उन्हे भारत का विस्मार्क और लौह पुरुष भी कहा जाता है। वे केवल सरदार ही नही समस्त भारतीयों के ह्रदय के सरदार थे। प्राचार्य डॉ. राव ने कहा कि श्रीमती इन्दिरा गांधी तीन बार भारत की प्रधानमंत्री रहीं वे प्रथम महिला प्रधानमंत्री थीं। भारतीय परमाणु कार्यक्रम के माध्यम से उन्होने भारतीय सैन्य शक्ति को सम्पन्न किया एवं हरित क्रांति भारतीय किसानों के उत्पादन बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ। कार्यक्रम में डॉ. विजय कुमार चौधरी, डॉ. सुभाष कुमार गुप्ता, श्रीमती कविता मंध्यान, श्री नन्दन शर्मा सहित शिक्षक विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अन्य कार्यक्रम में वनस्पति विभाग द्वारा आयोजित **शोध व्याख्यान प्रतियोगिता** का उद्घाटन करते हुए डॉ. अभय कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि समाज वनस्पतियों पर अपने विभिन्न आवश्यकताओं के लिए निर्भर हैं। वानस्पतिक शोध द्वारा बढ़ती आबादी की जरूरत खाद्यान्न उत्पादकता बढ़ाकर किया जा सकता है। जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग से पौधों के उत्पादकता एवं गुणों में अभिवृद्धि किया जा सकता है। एवं नये गुणों का समावेशन क्रांतिकारी कदम है। फसलों के सूक्ष्म जीव जनित रोग के रोकथाम खाद्यान्न सुदृढ़ीकरण में सहयोगी होता है। कार्यक्रम में स्नातक एवं परास्नातक वर्ग के कुल 40 छात्र–छात्राओं ने प्रतिभाग किया जिसमें शैवाल का आर्थिक महत्व, बैक्टेरियोफेज का रेप्लीकेशन, कवक का आर्थिक महत्व, लाइकेन का आर्थिक महत्व, बायो–डीजल, प्लान्ट ग्रोथ रेगुलेटर, ओजनलेयर, अम्ल वर्षा, प्रोटोप्लास्ट कल्चर, पार्थिनोकार्पी, नाइट्रोजन चक्र, सीवेज ट्रीटमेन्ट, इम्यूनोग्लोब्यूलिन आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। जिसमें **स्नातक वर्ग** में **प्रथम वर्ष** में शिवम जायसवाल **प्रथम स्थान,** आफरीन **द्वितीय स्थान** तथा खुशी सिंह **तृतीय स्थान** पर रहीं। **द्वितीय वर्ष** में विवेक कुशवाहा एवं श्वेता मिश्रा **प्रथम स्थान**, सुजीत कुमार **द्वितीय स्थान** तथा संदीप तिवारी **तृतीय स्थान** पर रहें। **तृतीय वर्ष** में सोनल दूबे **प्रथम स्थान**, अखिलेश सिंह एवं अंजली सिंह **द्वितीय स्थान** तथा आरती गौंड **तृतीय स्थान** पर रहीं। एवं **परास्नातक वर्ग** में जागृतीधर दूबे **प्रथम स्थान**, अंजु गुप्ता **द्वितीय स्थान** एवं प्रियंका चौरसिया **तृतीय स्थान** प्राप्त किया।

दूसरे अन्य कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वाधान में **''जातिवाद राष्ट्रीय एकता के लिए घातक है''** विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसमें राष्ट्रीय सेवा योजना तथा बी.एड्. एवं अन्य विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी